

भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में एक निडर और प्रतिष्ठित क्रांतिकारी थे जिन्होंने ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन के खिलाफ लड़ाई में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्हें उनकी देशभक्ति, समर्पण और भारत की स्वतंत्रता के लिए सर्वोच्च बलिदान देने की इच्छा के लिए मनाया जाता है। यहां भगत सिंह के जीवन और योगदान के बारे में कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं:

#### प्रारंभिक जीवन:

- भगत सिंह का जन्म 28 सितंबर, 1907 को पंजाब के बंगा में हुआ था, जो अब पाकिस्तान में है। वह राजनीतिक और सामाजिक सक्रियता के इतिहास वाले परिवार से आते थे।
- वह 1919 में जलियांवाला बाग नरसंहार और अकाली आंदोलन से गहराई से प्रभावित थे, जिसने सिख गुरुद्वारों के अधिकारों में सुधार और सुरक्षा की मांग की थी।

#### स्वतंत्रता आंदोलन में भूमिका:

- भगत सिंह सशस्त्र संघर्ष के माध्यम से ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के लिए समर्पित एक क्रांतिकारी संगठन, हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन (एचएसआरए) में शामिल हो गए।
- वह अंग्रेजों के खिलाफ विरोध और हिंसा के कई कृत्यों में शामिल थे, जिसमें दमनकारी कानूनों के विरोध में 1929 में दिल्ली में केंद्रीय विधान सभा पर गैर-घातक बमबारी भी शामिल थी।
- भगत सिंह प्रतिरोध के प्रतीक बन गए और भारत की स्वतंत्रता के प्रति अपनी निडरता और प्रतिबद्धता के लिए जाने जाते थे।

#### जेल और भूख हड़ताल:

- जेल में रहते हुए, भगत सिंह और उनके साथी कैदियों ने राजनीतिक कैदियों के लिए बेहतर इलाज की मांग और ब्रिटिश जेलों की कठोर परिस्थितियों को उजागर करने के लिए भूख हड़ताल की।

#### निष्पादन और विरासत:

- भगत सिंह को, राजगुरु और सुखदेव के साथ, ब्रिटिश पुलिस अधिकारी जे.पी. सॉन्डर्स की हत्या में शामिल होने के लिए मौत की सजा सुनाई गई थी। उन्हें 23 मार्च, 1931 को लाहौर सेंट्रल जेल में फाँसी दे दी गई।
- भगत सिंह की फाँसी का व्यापक विरोध हुआ और स्वतंत्रता संग्राम के बारे में लोगों में जागरूकता बढ़ी।

#### विचारधारा एवं मान्यताएँ:

- भगत सिंह समाजवादी और मार्क्सवादी विचारधारा से बहुत प्रभावित थे। वह शोषण से मुक्त एक न्यायसंगत और न्यायसंगत समाज की आवश्यकता में विश्वास करते थे।
- उन्होंने धर्मनिरपेक्षता का समर्थन किया और सांप्रदायिकता और धार्मिक भेदभाव के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

## परंपरा:

- भगत सिंह भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में साहस और बलिदान के प्रतीक बने हुए हैं। भारत में उन्हें अक्सर "शहीद-ए-आज़म" (राष्ट्र का शहीद) कहा जाता है।
- उनका जीवन और कार्य दुनिया भर में स्वतंत्रता सेनानियों और कार्यकर्ताओं को प्रेरित करते हैं जो न्याय, समानता और उपनिवेशवाद और उत्पीड़न का अंत चाहते हैं।
- भगत सिंह के जीवन और बलिदान को भारत में विभिन्न स्मारकों, कार्यक्रमों और लोकप्रिय संस्कृति के माध्यम से मनाया जाता है। उनकी जयंती, 28 सितंबर, को उनके सम्मान में "शहीद दिवस" (शहीद दिवस) के रूप में मनाया जाता है।

भारत की स्वतंत्रता के लिए भगत सिंह के समर्पण और अपने विश्वासों के लिए अंतिम बलिदान देने की उनकी इच्छा ने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उनकी विरासत भारतीयों और दुनिया भर के लोगों की पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी जो न्याय, स्वतंत्रता और समानता के सिद्धांतों में विश्वास करते हैं।

